International Journal of Scientific Research in Science and Technology
Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X (www.ijsrst.com)
doi : https://doi.org/10.32628/IJSRST

महिला लेखन में आत्मकथा की संस्कृति

दिग्विजय कुमार राय

एसोसिएट प्रोफेसर बी0.एस.एन.वी पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज लखनऊ

Article Info
Volume 8, Issue 3
Page Number : 1088-1091

Publication Issue
May-June-2021

Article History
Accepted : 10 June 2021
Published : 30 June 2021

सारांश

वर्तमान सदी सामाजिक मर्यादाओं के नाम पर बंधन के प्रतिषेध का समय है। समाज के हाशिए पर अपनी उपेक्षाओं को दरकिनार करते हुए अपनी अस्मिता के लिए संघर्ष किया है और बराबरी में अपनी सार्थक उपस्थिति दर्ज की है। अस्मिता के लिए संघर्ष में इमानदार कोशिश है– अपनी आत्मकथा लिखना और संपूर्ण मानवता के परिप्रेक्ष्य एवं सामाजिक स्थिति में अपनी इयत्ता को अन्वेषित करना। महिला लेखिकाओं की परंपरा लम्बी है किन्तु पुरुष वर्चस्व और अपनी नियति के बीच आत्मान्वेषण और अभिव्यक्ति का साहस करने वाली हिन्दी लेखिकाओं की आत्मकथा की संस्कृति को यह शोध आलेख अन्वेषित करता है।

विषय संकेत:– आत्मकथा, महिला लेखिकाएँ, महिला लेखन

प्रस्तावनाः–

आत्मकथा आधुनिक हिन्दी साहित्य की अत्यन्त लोकप्रिय विध है। हिन्दी में आत्मकथा लेखन की विधिवत् शुरूआत छायावाद युग में हुई। इसके पहले बनारसीदास जैन अपनी आत्मकथा 'अर्धकथानक' (1641) लिख चुके थे। 'अर्धकथानक' को हिन्दी की पहली आत्मकथा कहा जाता है लेकिन यह रचना मूलतः पद्य में लिखी गई है। बनारसीदास जैन की परम्परा आगे नहीं चल पायी। आधुनिक काल में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने कुछ आप बीती, कुछ जग बीती' शीर्षक से आत्मकथा का अंश लिख था। आत्मकथा लेखन के सन्दर्भ में प्रसिद्ध समीक्षक प्रोफेसर रामस्वरूप चतुर्वेदी ने लिखा है–

"आत्मकथा लेखन में विनम्रता का गुण उतना अपेक्षित नहीं, जैसा सामान्यतः समझा जाता है, जितना निर्वैयक्तिकता का।इस निवैक्तिकता वृत्ति के कारण आत्मकथा निष्चय ही एक आधुनिक और अपेक्षया कठिन कला है।"

जहाँ तक महिला लेखन का सवाल है, वहाँ पर आत्मकथा की संस्कृति देर से विकसित हुई । पितृसत्तात्मक समाज में जहाँ नारी नाम से नहीं सम्बन्धवाचक शब्दों से जानी जाती थी, वहाँ पर किसी महिला से आत्मकथा लेखन की अपेक्षा करना बेमानी था। बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशक तक भारत में लेखिकाएँ अपने

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

वास्तविक नाम से भी नहीं जानी जाती थीं। 'दुलाई वाली' कहानी की लेखिका बंग महिला का वास्तविक नाम राजेन्द्र वाला घोष था। बीसवीं शताब्दी के दूसरे दशक में सरला एक विधवा की आत्मजीवनी' पुस्तक लिखी गई। इस पुस्तक की लेखिका का नाम था– 'दुखिनी बाला' पुरुष प्रधान समाज में एक ऐसा दौर भी था जब महिला अपने नाम से नहीं जानी जाती थी। इस आत्मकथा में लेखिका ने नारी जिन्दगी की विवशता का मार्मिक आख्यान कहा है। लेखिका ने एक घटना का जिक्र किया है। लेखिका के भाई मोहन की शादी की बात चल रही थी। उस समय डाकिया घर में तार का एक पीला लिफाफा लेकर आया। उस तार को पढ़ते हुए लेखिका के बाबूजी अपनी बेटी का नाम लेकर जोर–जोर से रोने लगे। उन लोगों के अनुसार उनकी बेटी अब रोड हो गई। कम उम्र की लड़की उस माजरे को समझ नहीं पायी। वह सोचने लगी–

"मुझे याद आया कि अम्मा यह कहकर रोयी थी कि मैं रौंड़ हो गई। अब मैं सोचने लगी कि रोड़ के मानी क्या, और मैं क्या हो गई और मुझमें कौन–सा परिवर्तन हो गया? समस्त शरीर पर ध्यान दिया, सब कुछ वैसे ही अपने खिलौनों को देखा। गुड़िया देखीं। पुस्तकें उलट–पुलट डालीं। किन्तु कोई अन्तर न दिखाई दिया। फिर मैं सोचने लगी, मैं रोड़ कैसे हो गई और रोड़ हो जाने से क्या हुआ, मेरी कौन सी हानि हुई और मुझे कौन–सी क्षति पहुँची ?"

दुखिनी बाला द्वारा लिखित आत्मकथा के बाद इस क्षेत्र में एक लम्बा अन्तराल दिखलाई देता है उसके सामाजिक और ऐतिहासिक कारण रहे होंगे। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में महिला रचनाकारों ने कथा और काव्य के क्षेत्र में अपनी महत्वपूर्ण उपस्थिति का एहसास करा दिया था। कविता के क्षेत्र में महादेवी वर्मा ने भारत को आजादी के पहले के साहित्य में अपनी विशिष्ट पहचान बना ली थी। महिला कथाकारों में बंग महिला, सुभद्रा कुमारी चौहान, उपादेवी मित्र, होमवती देवी, सत्यवती मल्लिक, चन्द्र किरण सौनरिक्सा, शिवानी, कृष्णा सोबती, मन्नू भण्डारी, उषा प्रियंवदा, सुधा अरोड़ा, शशिप्रभा शास्त्री, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, मृदुला गर्ग, चन्द्रकान्ता, राजी सेठ, मंजुल भगत, मेहरुन्निसा परवेज, मालती जोशी, नासिरा शर्मा, नमिता सिंह ऋचा शुक्ल, कृष्णा अग्निहोत्री, कमल कुमार, अलका सरावगी, मधु कांकरिया, जया जादवानी, मुक्ता, मालती जोशी, सूर्यबाला, मैत्रेयी पुष्पा, लवलीन इत्यादि की गौरवमयी परम्परा रही है। इसके बाद की महिला कथाकारों में अनामिका, नीलाक्षी सिंह, ज्योत्स्ना मिलन, दूर्वा सहाय, क्षमा शर्मा, रजनी गुप्त, दीपक शर्मा, कविता, पंखुरी सिन्हा, मनीषा कुलश्रेष्ठ कथा लेखन में अत्यन्त सक्रिय हैं। इन रचनाकारों में मात्र चन्द्रकिरण सौनरिक्सा, मन्नू भण्डारी, कृष्णा अग्निहोत्री और मैत्रेयी पुष्पा ने आत्मकथाएँ लिखी हैं।

आत्मकथा लेखन के क्षेत्र में एक लम्बे अन्तराल के बाद तीन लेखिकाओं ने अपनी रचना को आत्मकथा कहने का साहस किया है। ये रचनाएँ हैं– 'जो कहा नहीं गया' (कुसुम अंसल, 1996), 'लगता नहीं है दिल मेरा' (कृष्णा अग्निहोत्री, 1997), 'बूंद बावड़ी' (पद्मा सचदेव, 1999)।

जब कोई स्त्री आत्मकथा लिखने का प्रयास करती है तो उसे दुःसाहस के रूप में देखा जाता हैं। पुरुष जब आत्मकथा लिखता है तो अपने जीवन के नितान्त गोपनीय पक्ष को उद्घाटित करके रख देता है। उसके निजी साहस की प्रशंसा होती है, उसकी तटस्थता की जोर–शोर से तारीफ होती है। किन्तु जब कोई स्त्री आत्मकथा लिखती है तो तहलका मच जाता है। 'स्त्री और आत्मकथा' शीर्षक लेख में प्रसिद्ध महिला कथाकार

शरद सिंह ने लिखा है— 'इसीलिए लेखिकाओं द्वारा अपनी आत्मकथा का प्रकाशन कराए जाने पर अच्छा—खासा बवाल मच जाता है। अनेक प्रश्न उठ खड़े होते हैं कि क्या उन्हें ऐसा लिखना चाहिए था?

प्रसिद्ध कथा—लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री की आत्मकथा 'लगता नहीं है दिल मेरा एक धमाके के रूप में हिन्दी जगत में आयी। इस आत्मकथा को पढ़ने से उन लेखकों को पीड़ा पहुंची थी जिनके द्वारा किये गए भावनात्मक शोषण का जिक्र कृष्णा अग्निहोत्री ने किया है।

मैत्रेयी पुष्पा समकालीन कथा—साहित्य की अत्यन्त चर्चित लेखिका हैं। आपने हिन्दी कथा—साहित्य को 'बेतवा बहती रही', 'इदन्नमम', 'चाक', 'झूला नट' 'अल्मा कबूतरी' जैसी प्रसिद्ध औपन्यासिक कृतियाँ दी हैं। मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा का नाम है 'कस्तूरी कुण्डल बसै' (2002)। इस आत्मकथा को पढ़ते हुए उपन्यास के कथा रस का आस्वाद मिलता है। स्वयं लेखिका ने स्वीकार किया है कि मैं 'इसे उपन्यास कहूँ या आप बीती?' मैत्रेयी पुष्पा ने लिखा है—

"यही है हमारी कहानी मेरी और मेरी माँ की कहानी। आपसी प्रेम, घृणा, लगाव और दुराव की अनुभूतियों से रची कथा में बहुत सी बातें ऐसी हैं जो मेरे जन्म से पहले ही घटित हो चुकी थीं, मगर उन बातों को टुकड़ों—टुकड़ों में माता जी ने जब—तब बता डाला, जब—तब उन्हें अपनी बेटी को स्त्री—जीवन के बारे में नये सिरे से समझना पड़ा।"

'कस्तूरी कुण्डल बसै' के अध्यायों के नाम काव्यात्मक हैं। जैसे— 'रे मन जाह, जहां तोहि भावे', 'तुम्ह पिंजरा', मैं सुअनातोरा, 'हम घर साजन आये', 'दुल्हनियाँ गाओ री मंगलचार' 'कैसे नीर भरे पनिहारी' इत्यादि । कस्तूरी मैत्रेयी की माँ का नाम था। सोलह वर्षीया किशोरी कस्तूरी ने 'मैं ब्याह नहीं करूंगी' कहकर अपनी विद्रोही चेतना का परिचय दिया था। कस्तूरी का विद्रोह समाज की सड़ी—गली परम्पराओं पर तीखा प्रहार था। कस्तूरी ने अपना रास्ता स्वयं तैयार किया। 'कस्तूरी कुण्डल बसै' में नारी की बेबसी और परवशता का आख्यान कई स्थलों पर मिलता है। कस्तूरी की भाभी ने कस्तूरी को जो बात समझाई थी, मैत्रेयी पुष्पा अपने शब्दों में इस प्रकार प्रस्तुत करती हैं—

'किताबों में यही लिखा है कि जिन्दगी अनव्याहे ही काट दो और भारी सिल की तरह भैया की छाती पर लदी रहो। यह कहीं नहीं लिखा कि बेटी धान का पौध होती है, समय से दूसरी जगह रोप देना अच्छा होता है बखत निकलता जाता है, पौध मरने लगता है, जड़ें सूख जाती हैं।"

माँ का विद्रोही संस्कार मैत्रेयी को विरासत में मिला था। 'कस्तूरी कुण्डल बसै' को हम मैत्रेयी के साथ उसकी माँ कस्तूरी की संघर्षगाथा भी कह सकते हैं। औपन्यासिक शिल्प में रची गई इस आत्मकथा में प्रारम्भिक समाज की जड़ता को तोड़ने वाले सूत्र मिलते हैं।

रमणिका गुप्त कवयित्री और जुझारू महिला हैं। आप 'युद्धरत आम आदमी' पत्रिका का संपादन कर रही हैं। इनकी आत्मकथा 'हादसे' 2005 में प्रकाशित हुई। प्रसिद्ध कथाकार राजेन्द्र यादव ने इस पुस्तक की भूमिका में लिखा है—

'दुर्दम्य और दुर्द्धषं । रमणिका गुप्ता की इस आत्मकथा को पढ़ते हुए दो हीं शब्द बार—बार दिमाग में आते हैं। अगर इसे कोई दूसरा नाम दिया जा सकता है तो वह है— अपराजेय संघर्ष कथा।" इस आत्मकथा में हमें एक संघर्षशील नारी की जुझारू जीवन—गाथा दिखलाई पड़ती है।

प्रख्यात कथा लेखिका मन्नू भण्डारी की एक कहानी यह भी' (2008) नारी विमर्श की एक नई रोशनी से हमारा साक्षात्कार करवाती है। हिन्दी में आत्मकथा की संस्कृति जबसे विकसित हुई है, तब से आत्मकथा लिखने वालों ने इसे भिन्न– भिन्न नाम दिया है। जैसे– ''आत्मजीवनी', 'आत्मकथा', 'आत्मगाथा', 'आपबीती', 'आत्मचरित', 'निज वृत्तान्त', 'मेरी कहानी', 'अपनी कहानी' और 'आत्म विश्लेषण। '

रचनात्मक लेखन में एक लम्बे ठहराव के बाद मन्नू भण्डारी ने इस कृति का सृजन किया है। मन्नू जी इस रचना को आत्मकथा नहीं मानतीं। उनका स्पष्ट मत है–

'आगे बढ़ने से पहले एक बार अच्छी तरह स्पष्ट कर देना चाहती हूँ कि यह मेरी आत्मकथा कतई नहीं है, इसीलिए मैंने इसका शीर्षक भी ''एक कहानी यह भी' ही रखा।"

मन्नू भण्डारी के व्यक्तित्व की विनम्रता की झलक उपरोक्त कथन में दिखती है। दूसरों की जिन्दगी पर कालजयी कहानियाँ और कालजयी उपन्यास रचने वाली मन्नू जी अपनी आत्मकथा को भी कहानी ही मानती है । मन्नू भण्डारी की यह आत्म स्वीकारोक्ति इस कृति को नई दृष्टि से विश्लेषित करने की दिशा देती है। डॉ0 नमिता सिंह इस कृति को आत्मकथा नहीं बल्कि कहानी मानती है। यह कृति मात्र मन्नू भण्डारी की आत्मकथा ही नहीं है बल्कि इसमें नई कहानी आन्दोलन की सुन्दर झलक मिलती है। नारी विमर्श के पुरोधा राजेन्द्र यादव के द्विधाग्रस्त, आत्मकेन्द्रित और पुरुष वर्चस्ववादी रूप को बेनकाब करके मन्नू भण्डारी ने अत्यन्त साहस का परिचय दिया है। अपने जमाने की अत्यन्त चर्चित कथाकार चन्द्रकिरण सौनरिक्सा लम्बे समय तक गुमनामी के अंध रे में खोयी रहीं। उनकी आत्मकथा 'पिंजरे की मैना' 2008 में प्रकाशित हुई। इस कृति में लेखिका ने अपने चित्रकार पति कान्तिचन्द्र सौनरिक्सा के सामन्ती और क्रूर चेहरे से साक्षात्कार करवाया है। प्रभा खेतान कथाकार और नारी विमर्श की चिन्तक थीं। आपने सिमोन द बुआ की विश्व–विख्यात पुस्तक 'द सेकेण्ड सेक्स' का हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत किया। प्रभा खेतान की आत्मकथा 'अन्या से अनन्या' साहित्य जगत खूब चर्चित हुई । इस कृति में प्रभा खेतान ने अपने जीवन के अन्तरंग पक्ष को बड़ी बेबाकी और साहस से उद्घाटित किया है। इस प्रकार हम देखते हैं कि लेखिकाओं ने आत्मकथा साहित्य में अनेक उत्कृष्ट कृतियाँ दी हैं। संयोग की बात यह है कि इनमें से लगभग सभी कथाकार है।

सन्दर्भः–

- रामस्वरूप चतुर्वेदी 'हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास', पृ0 190.
- समकालीन साहित्य समाचार' (जुलाई, 2008), किताबघर प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 15.
- शरद सिंह 'हंस' (सितम्बर, 2010), पृ0 77.
- मैत्रेयी पुष्पा – ' कस्तूरी कुण्डल बसै', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ0 5.
- मैत्रेयी, पुष्पा 'कस्तूरी कुण्डल बसै', पृ0 16.
- राजेन्द्र यादव – 'हादसे' की – भूमिका, पृ0 7.
- मन्नू भण्डारी 'एक कहानी यह भी', राधकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, – पृ0–8.